ओम शांति,

बहोत सुंदर विषय है आजका कल से भी जुड़ा हुआ और हमारे सम्पूर्ण जीवन से जुड़ा हुआ। बाबा इस सृष्टि पर सब से महान ऋषि, सभी शक्तियों और सिद्धियों के स्वामी थे। में उनको इस दृस्टि से देखता रहा था ६८ में बाबा के पास आया था पहली बार, में बाबा को इस दृस्टि से देखता था कि संसार में सब से अधिक बुद्धिमान आत्मा चारो युगो में वही थे, है, थे शब्द तो बोलना पड़ता है। आप सब भी इस बात से अवश्य सहमत होंगे भगवान् ने जब यह यूनिवर्सिटी खोली उसमें पहला नंबर किसको मिला? गोल्ड मेडल? ब्रह्मा बाबा को। तो परमातम विश्व विध्यालय के गोल्ड मेडलिस्ट पहला नंबर प्राप्त करने वाले चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेने वाले हम सब के पिता, सब से महान ऋषि, महान कर्म योगी। यह केवल उनकी अतिशियोक्ति महिमा में नहीं कर रहा हूँ यहीं सत्य है कर्म योगी अगर सृस्टि पर सब से पहले हुआ तो वोह ब्रह्मा बाबा। गीता में कर्मयोग का वर्णन है केवल गीता में और किसी धर्म ग्रंध में नहीं। उसकी व्याख्या करने वालों ने कर्मयोग को केवल इतना मान लिया के निस्काम भाव से कर्म करना ही कर्मयोगी बनना है, परन्तु यह कर्म योग कि अधूरी भाषा रही। **निस्काम भाव से परमातम स्वरुप होकर स्थिर होकर करना यह कर्मयोग है।** जब कि गीता में यह बात आयी है लेकिन कोई भी उस बात को पकड़ नहीं पाया है। अर्जुन बुद्धि को मेरे स्वरुप पर स्थिर करके फिर कर्म कर यह योग कि सम्पूर्ण परिभाषा है। हम भी अपनी बुद्धि को परमातम स्वरुप पर स्थिर करके कर्म करते है यह हमारी कर्मयोगी स्थिति है। बाबा ने हम सभी को यह महान स्थिति प्रैक्टिकल में करके दिखाई। आपने सुना आज सवेरे दादी जानकी बाबा कि चार पांच उन महानताओं का वर्णन कर रही थी थोड़े में किया उन्होंने एक ही बार सब से महान त्यागी, सब से महान तपस्वी, सब से बड़े सेवाधारी, सब से अधिक क्षमा शील, तृप्त कि फिलिंग देने वाली आत्मा जो केवल कहने के लिए प्रजापिता नहीं थे, सच्चे अर्थो में पिता थे माता थे। हमें सोचना है जिनके मातपिता इतने महान हो उन्हें कैसा होना चाहिए?

में आप सभी के सामने एक और संकल्प रख देता हूँ - इस क्लास कि चर्चा के साथ हम सभी के जीवन में जब हम सवेरे आँख खोलते है उस के बाद के पहले दस मिनट बहोत महत्त्वपूर्ण है। आप सार रूप में इतना ध्यान रखेंगे जैसा हम अपने जीवन का निर्माण करना चाहते हो वैसे ही संकल्प सवेरे उठ कर करें, जैसा हम अपना दिन देखना चाहते हो वैसे ही संकल्प सवेरे उठ कर करें। बाबा ने अभी ३१ dec कि मुरली में ही बहोत अच्छी बात कहीं - सवेरे उठ कर याद करो सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, सफलता मेरे गले का हार है, में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ। करके देखेंगे सभी अपने जीवन को एक प्रयोगशाला बना दें संकल्पो का क्या इफ़ेक्ट होता है जीवन पर खुद इसको अनुभव में ले आयें। सवेरे जो संकल्प हम करते है वोह किस तरह हमारी दिन चर्या पर और हमारे पुरे जीवन पर प्रभाव डालते है । इसके प्रयोग हमें करने है बहोत सुंदर विधि है यह। तो सवेरे उठ कर ही हम सोचेंगे जिसका बाप ब्रह्मा जैसा हो, जिसका बाप स्वयं भाग्यविधाता हो, जिसका बाप सर्व श्रेस्ठ ऋषि रहा हो जो इस संसार में सब से पहले कर्मातीत और फ़रिश्ते स्वरुप को प्राप्त हुए हो उनके बच्चो को कैसा होना चाहिए? सवेरे का यह थोडा भी चिंतन हमारी जीवन कि धरा को बदलने वाला हो जाएगा।

सभी इस छोटी सी और इम्पोर्टेन्ट बात पर ध्यान दें **हमारे अपने ही संकल्प हमारे जीवन का निर्माण करते है।** जीवन परिवर्तन लम्बी चौड़ी बात नहीं केवल संकल्प परिवर्तन है यह छोटा सा फार्मूला आप अपने जीवन में अप्लाई करके अपने जीवन को जिस तरफ ले जाना चाहे उस तरफ ले जा सकते है। तो बाबा हमारे सामने कर्मयोग का और फ़रिश्ते स्वरुप का सब से सुंदर उदाहरण है। बाबा को जिस रूप में मेने देखा इस जीवन में बाबा को केवल आँखों से देखने कि बात नहीं होती, आप सायद सोचते होंगे सभी भाई बेहेने कि हमने बाबा को नहीं देखा तो हम उनके बारें कैसे क्या जान सकते है? केवल आँखों से देख कर कोई किसी को नहीं जान सकता। जानने के लिए चाहिए दिव्य

विवेक, बिलकुल स्वच्छ बुद्धि, दुसरो कि महानताओं को पहचानने का विवेक चाहिए। चाहे आपने उन्हें साकार रूप में नहीं देखा परन्तु उनकी सभी झलकियां उनका सम्पूर्ण चरित्र हम सब के सामने सपस्ट है। सोचने कि बात है जो सब से पहले कर्मातीत हुए हों उनकी स्थिति कितनी सुंदर रही होंगी, उन्होंने अपने जीवन को किस तरह साधनाओ में तपस्या में तपाया होगा।

मुझे याद रहता है एक सीन जब हम पहली बार मधुबन में आये थे तो बाबा अपनी झोपड़ी में रहते थे जो झोपड़ी आज आप देखते है वोह झोपड़ी ऐसी नहीं थी वोह खुजूर के पत्तो से बनी हुयी बिलकुल साधारण। खजूर के पत्तो कि दिवार खड़ी हुयी ऊपर भी खजूर के पत्ते और अंगूरों कि बेल से ढका हुआ सारा बगीचा। मेरा यह अनुभव मुझे बहोत ही याद रहता है ऐसा लगता था हमने सुना कि बाबा झोपड़ी में बैठे है, हम झोपड़ी कि तरफ देखते थे जाने कि हिमत नहीं होती थी। हम छोटे भी थे और डरते थे लेकिन ऐसा लगता था झोपड़ी से चारो और शांति कि बहोत गहरी लहरें फ़ैल रही हो जैसे वाइब्रेट कर रही हो झोपड़ी शांति कि तरंगो को, वोह बाबा का अंतिम वर्ष था इस धरा पर महान तपस्या बाबा का अंतिम साल निरंतर योगयुक्त स्थिति में बिता था। मुझे बाबा के नशे कि बहोत बातें याद रहती है में जब समर्पित हुआ तो वोह सब चीजे बहोत फ्रेश थी उन्होंने बहोत मदद कि आखरी दिन कि आखरी बात आपको सुनाता हूँ बाबा को छाती में थोडा सा दर्द था आपने सुना होगा १८ जनुअरी को बाबा सवेरे को क्लास में नहीं आये थे। भाइयो ने बाबा को कहा कि बाबा आपकी तबियत थिक नहीं लगती है तो डॉक्टर को बुलाएं बाबा अपने इस धरा पर अपने अंतिम दिन कि सर्व श्रेस्ठ स्थिति में थे बाबा ने उठ कर कहा बच्चे डॉकटर क्या करेगा बाबा तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा है। सम्पूर्ण प्रकृति को जित ने वाले शरीर के किसी भी कष्ट से ऊपर रहने वाली यह महान आत्मा इस सृस्टि के लिए सचमुच ही बहोत बड़ा शृंगार थे, शोभा थी।

ऐसे बाप के हम बच्चे है हमें भी उनके तरह ही कर्मयोगी बनना है और फरिश्ता बनना है। **हम सोचे क्या फरिश्ता बनने के लिए हमारे पास कोई प्लान है या केवल हम कहते है हमें फरिश्ता बनना है? सभी अपने पर दृस्टि डालें हम कहते है हमें कर्मातीत होना है क्या सचमुच हम चाहते है कर्मातीत होना?** में यदि हाथ उठवाऊं तो सायद ही कोई आत्मा ऐसी हो जो सच्चे दिल से चाहती हो मुझे कर्मातीत होना है फरिश्ता बनना है यह मजिल सचमुच बहोत ऊँची है जब तक हम इसके लिए कोई सुंदर प्लांनिंग नहीं करेंगे तब तक यह मंजिल हमारे लिए बहोत दूर कि बात रेह जायेगी।

सोचेने कि बात है जब **ब्रह्मा बाबा** अव्यक्त हुए में सोचा करता था **पहले नंबर कि आत्मा को कर्मातीत होने में ३३ साल तपस्या करनी पड़ी** गहन तपस्या, व्यर्थ से सदा सदा मुक्त आत्मा, सर्व श्रेस्ठ त्यागी, जिसने त्याग के बाद पैसे को देखा नहीं, जिसने अपने त्याग कि कोई अभ्यास नहीं था कि मेने कुछ छोड़ा, जो यह कहते थे कि यह तो कोड़ी थी, पत्थर थे, छोड़ दिए क्या छोड़ा? हीरे मिल रहे है, सोने कि दुनिया मिल रही है, स्वयं भगवान् मिल गया जिसे अपने त्याग का अभ्यास भी नहीं था, ऐसे महान त्यागी और सर्व श्रेस्ठ ऋषि को कर्मातीत होने में ३३ वर्ष लगे **तो हमें क्या करना चाहिए?** विचारणीय बात है। इस पर चिंतन का विषय है किसी के कहने से नहीं होगा स्वयं को स्वयं कुछ कहना होगा हम सभी बाबा से लिखते है। आप लोगो में से बहुतो ने बाबा कि कहानियां सुनी होंगी बाबा निरहंकारिता कि तो चेतन प्रीतिमा थे, बाबा के चलने से, बोलने से, देखने से, व्यवहार से किसी को तनिक भी अहंकार कि कोई फिलिंग नहीं होती थी। सम्पूर्ण नीर अहंकारिता। हर कार्य करते थे अगर गेहूं चुने जा रहे है तो बाबा भी बैठे है थाली लेकर देखने वाले यह सोचेंगे यह ब्रह्मा? सृस्टि को नया बनाने वाला? गेहूं चुन रहा है सोच भी नहीं सकता। कर्मयोग का बिलकुल सपस्ट उदाहरण।

तो हम पहली बात याद रखेंगे अब में आपको कर्मयोगी बनने के लिए कुछ इम्पोर्टेन्ट टिप्स बता देता हूँ पहले

तो हमें अपने पास यह स्लोगन लिख लेना है **बिना कर्मयोगी बने कोई भी कर्मातीत नहीं हो सकता और बिना कर्मेन्द्रिय जित बने कोई कर्मयोगी नहीं बन सकता ।** कर्मयोगी बनने के लिए कर्म के प्रभाव से भी परे होना पड़ता है जिसको बाबा ने भी कहा है कर्म कांशसनेस बड़ी नेचुरल बात है उसकी फिलिंग उसकी स्मृति उसका प्रभाव उसके ऊपर रहता है लेकिन **योगी वोह, बुद्धिमान वोह जो अपनेको कर्म कि फिलिंग से ऊपर उठाले ।**

चलेंगे अब सभी एक फिलिंग में बैठेंगे में मास्टर सर्व शक्तिवान और ऊपर से परमातम शक्तियां मुझ में प्रवेश कर रही है, सभी कर्म कांशसनेस ना होकर थोडा ध्यान देकर प्रैक्टिस करेंगे कर्म के प्रभाव से ऊपर रेहकर कर्म करने कि में अपने जीवन में बुद्धिमानी कि दो डेफिनेशन्स रखता आया हूँ । आप भी उसको अपने जीवन का एक स्वरुप बना सकते है **बुद्धिमान वोह जो अपने चित को शांत रखना सिखले ।** मनुष्य का मन बहोत भटकता है, गुलजार दादी सुना रही थी आप सब ने सुना है क्या क्यूँ में भटक रहा है यह मन । सच्ची दिव्य बुद्धिमानी, दिव्य विवेक वही है जो अपने चित को शांत रखना सिख लें । अगर ऐसा विवेक नहीं है तो मनुष्य कि अपनी बुद्धि समस्याओं का, उल्जनो का कारन बन जाती है । आज संसार में बहोत बुद्धिमान लोग बहोत उलझे हुए है ।

अभी अभी में अपनी यात्रा में एक बहोत बड़ी व्यक्ति से मिला जो एक बहोत बड़ी कंपनी का प्रेसिडेंट है लेकिन उसको नींद नहीं आती । बहोत बड़ा आदमी मेरे सामने बैठके रो गया अपने जीवन से बहोत दुखी, जिसकी सैलरी भी ढाई लाख रुपये पर मंथ है अपने घर ले गया मेने कहा मकान भी एक महल है लेकिन शांति नहीं, सुख नहीं चैन नहीं नींद नहीं बुद्धिमानी अति अधिक बुद्धिमानी अहंकार में मनुष्य को ले जाती है और जो मनुष्य कि परेशानियों को बढ़ा देता है । दूसरी बुद्धिमानी कि परिभाषा है **बुद्धिमान वोह है जो अपनी बुद्धि को परमातम स्वरुप पर स्थिर कर दें ।** कर्मयोग के लिए हमें यह प्रैक्टिस करनी है हाथ से कर्म करें और बुद्धि बाबा के स्वरुप पर स्थिर रहे बुद्धि परमातम शक्तियों को ग्रहण करती रहे ईश्वरीय शक्तियां उसकी एनर्जी हम में प्रवेश करती रहे है और हम हाथों से कर्म करते रहे यह बहोत बड़ी प्रैक्टिस है । वैसे तो मनुष्य सोचता है कि एक ही साथ बुद्धि दो काम कैसे करेगी परन्तु हम सब को रोज का अनुभव है कोई भी काम करते हुए हमारी बुद्धि काम में थोड़े ही रहती है काम से बहार थोडा इधर उधर ज्यादा भटकती है । जितनी बुद्धि हमें काम में लगनी आवश्यक है उतनी लगाने के बाद हम अपनी बुद्धि को बाबा में स्थित कर सकते है थोड़ी सी प्रैक्टिस करनी है ।

योग को हम कई स्वरूपों में बाँट लें एक बहोत अच्छा महावाक्य हमें याद रखना है अव्यक्त मुरली का महावाक्य है **परात्मा में है परम बल यदि तुम उसकी याद में रेहकर कर्म करो तो तुम्हारे हर कर्म में परमबल भी साथ रहेगा और इससे हमारी कार्य शक्ति बढ़ जायेगी हम कम समय में ज्यादा काम कर पाएंगे ।** इसलिए कुछ सरल से शब्द कुछ सरल से महावाक्य भी हम याद रख लिया करें बाबा मेरे साथ है । छोटा सा महावाक्य है लेकिन बहोत प्रभावशाली है भगवान् मेरे साथ है और शब्द चुन लें आप स्वयं भगवान् मुझे साथ दे रहा है और परमातम शक्तियां मेरे साथ काम कर रही है अगर कर्म के समय पूरा समय भी यह याद ना रहे तो कर्म प्रारम्भ करने के समय कुछ अच्छी स्मृतियों से प्रारम्भ किया जाए ।

दूसरी बात स्वमान कि स्थिति, अशरीरीपन का अभ्यास, कुछ श्रेस्ठ स्मृतियों के साथ हम कर्म प्रारम्भ करें तो कर्म में दिव्यता आएगी, कर्म हम पर प्रभाव नहीं डालें और हम सहज ही योगयुक्त हो

जायेंगे । बाबा कि एक बात बहोत हंसी कि आपको सुनादे ब्रह्माबाबा कि बाबा जब स्नान करते थे तो उन दिनों में ऐसे बाथरूम नल और बाल्टियां और यह सुंदरता नहीं थी तो आज है बिलकुल साधारण बाथरूम लोटे होते थे पीतल के और वोह नीले नीले से तो लोटो से हम नहाते थे तो बाबा जब नहाते थे ना तो अपना अनुभव सुनतें थे कि में आनंदित हो जाता हूँ कि शिव पर लोटी चढ़ा रहा हूँ शिव बैठा है ना? शिव पर लोटी चढ़ा रहा हूँ आज तक मंदिरो में शिव पर लोटी चढ़ाई अब चेतन शिव पर लोटी चढ़ा रहा हूँ, आनंद हो गया ना नहाने में? हम भी जब नहाते है तुम भी अभ्यास करो नहाते हुए में इष्ट देव-इष्ट देवी हूँ अपने मंदिर कि धुलाई कर रही हूँ हमारा भी तो मंदिर है ना यह? बस अंतर इतना ही है भक्ति में भक्त हमारे मंदिर कि धुलाई करते है और इस समय हमें खुद अपने मंदिर कि धुलाई करनी है थिक है? सभी ऐसा अभ्यास करेंगे ।

खाना खाते हुए बाबा ने कई बार हमें यह योग कि ड्रिल सिखाई है भोजन को करते हुए भोजन को बाबा पर अर्पित करें बाबा को स्वीकार कराएं । एक बहोत अच्छी प्रैक्टिस में आजकल कर रहा हूँ और करा रहा हूँ आप उसका प्रयोग करें जीवन में और बहोत सुंदर अनुभव करें भोजन खाने से पहले थाली सामने आजाये बाबा को याद करलों दृस्टि देते हुए भोजन को कम से कम सात बार संकल्प करें में परम पवित्र आत्मा हूँ हमारे नैनो से पवित्र वाइब्रेशन्स निकल कर भोजन में समा जायेंगे । पवित्रता बढ़ने लगेगी । आप दूध पीते हो दूध पर भी येही अभ्यास करें दूध सामने रखलो दूध को दृस्टि देते हुए सात बार संकल्प करों में परम पवित्र आत्मा हूँ । आप इस प्रैक्टिस को बिमारियों को भी थिक करने में यूज़ कर सकते है जिसको डिप्रेशन हुआ हो, चिड़चिड़ापन रहता हो, माताओं को तो अपने सारे परिवार को भोजन खिलाना है आपके बच्चे बुरे संग में जा रहे हो किसी को बहोत क्रोध आता हो किसी को सराब पिने कि आदत पड़ गयी हो ऐसा भोजन खिलाएं आप । भोजन बनाते हुए यह प्रैक्टिस करलें बहोत अच्छे रिजल्ट मिलेंगे । मेने पेर्सोनली भी कुछ लोगो से यह अभ्यास कराएं है एक एक दिन में सुंदर रिजल्ट लोगो को मिल गए पवित्रता के बारें में ।

एक ही उदाहरण बताऊँ मुझे कहीं से एक कुमार का फ़ोन आया कि मेरी पवित्रता बहोत डिस्टर्ब हो गयी है बहोत परेशान हो गया हूँ लगता है मुझसे ज्ञान छूट जाएगा । मेने उसे यह दूध पिने कि विधि बताई दो बार दूध पीते हुए यह अभ्यास करो और दो दिन के बाद ही उसका फ़ोन आज्ञा कि मेरा सब कुछ अच्छा हो गया है । मुझे भी आस्चर्य लगा मेने भी ऐसा नहीं सोचा था कि दो दिन के अभ्यास से किसी को इतना सुंदर अनुभव हो सकते है। इसको हम अपना कर्मयोग बना लें सवेरे उठकर आप थोड़ी थोड़ी आदत बनाएं अपने जीवन में आप घर से बहार जा रहे है भाइयों को हमेशा ही रोज ड्यूटी पर जाना है घर से बहार निकलते हुए कम से कम एक मिनट नहीं तो तिन पांच मिनट आप बाबा कि याद में बैठे अपने को याद दिलाएं में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, बाबा मेरे साथ है, तो आपको लगेगा कि बाबा मेरे साथ चला कार्य पर यह तो सहज है ना? जब आप घर लौटते है वापिस नियम बनालें घर लौटते ही आपको चाय चाहिए नियम बनालें घर आते ही पहले बाबा कि याद में तिन मिनट बैठना है । यह छोटे छोटे हमारे नियम हमें कर्म योगी बनने में हमें बहोत मदद करेंगे।

कुछ चीजो का अपने जीवन में सिद्धांत बनालें हम यह हमारे सिद्धांत है सवेरे मुरली सुनते हुए, घर से सेन्टर तक जाते हुए सारा दिन काम करते हुए आठ घंटे आपको काम करना है तो आप यह संकल्प रख लें कि हमें किसी भी एक स्वमान का अभ्यास करना है हर घंटे में एक बार। **स्वमान से बहोत फायदा होगा बाहरी वातावरण और व्यक्तियों**

का प्रभाव हम पर नहीं पड़ेगा, हमारा प्रभाव उन पर जाएगा। इस तरह आप स्वयं विचार करलें भिन्न भिन्न कर्मो में भिन्न स्मृतियों को प्रैक्टिस में लाना है। माताओं के लिए और सहज भोजन बन रहा है बिच बिच में याद करो में इष्ट देवी हूँ शिवबाबा के लिए भोजन बना रही हूँ। अलग कर्म में किसी में जोड़ दों में एक महान आत्मा हूँ, किसी कर्म में फिक्स करलें में आत्मा इस शरीर से कर्म करा रही हूँ, किसी कर्म में आप प्रैक्टिस करलें बाबा करनकरावनहार मुझसे करा रहा है अपना नियम स्वयं बनाएंगे कर्मयोग बिलकुल सहज प्रैक्टिस है। कम से कम पांच चीजो कि प्रैक्टिस रोज आप कर्मो से जोड़ दें कोई भी पांच आप चुनलेंगे जो मेने बतायी है इसका बहोत सुंदर प्रभाव जीवन पर रहेगा। में आप सभी को बाबा कि वोह बात अवश्य याद दिलाऊंगा। जो सभी के जीवन में वर्त्तमान समय सभी समस्याओं को समाप्त करने का तरीका है हर बार आरहा है मुरली में है मास्टर सर्व शक्तिवान बच्चो देखो भगवान् ही हमें सम्बोधित ही हमें इतने महान स्वमान के साथ कर रहे है हर मुरली में आगया तुम मास्टर सर्व शक्तिवान हो। आप इस महावाक्य को अपने पास लिखलें **जो बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके पास आ नहीं सकते।**

अभी अभी सभी के पास समस्याएं है और बढाती जा रही है और बढ़ती जायेगी विनाश काल माना समस्याओं से भरा हुआ काल ऐसे काल में मास्टर सर्व शक्तिवान कि स्मृति हमें समस्याओं से मुक्त करेगी। आप स्वयं प्लान बनाएं जिनको समस्याओं से मुक्त होना है वोह रोज कम से कम दस बार अपने को याद दिलाएं एक बार नहीं में दस बार भी कम बताया है मेरे अनुसार जो अनुभव हुए है सब के कम से कम पच्चीस बार होना चाहिए। थोड़े दिन तक हमें इसकी धुन लगानी पड़ेगी। मास्टर सर्व शक्तिवान का अर्थ है सभी सुनलें ध्यान से बाबा ने कहा **जब से तुमने यह अलोकिक जन्म दिन कि गिफ्ट दी है तुम्हे सर्व शक्तियों कि जो शक्तियां मेरे पास है वोह सब तुम्हे दे दी है।** तो याद करेंगे सभी अपने को इस गहरी फिलिंग में ले चले परमातम शक्तियां मेरे पास है में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ। बहोत अच्छी तरह स्वयं को इस गहरी अनुभूति कि और ले चलें स्वीकार कराएं स्वयं को अनुभूति का आधार है स्वीकार कराना। एक है वैसे ही केह देना में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ दूसरा है अपने अंतरमन को स्वीकार करा देना जो शक्तियां सर्व शक्तिवान में है वोह सब उसने मुझे दे दी है। बहोत अच्छी फिलिंग होगी हम से जो शक्तियों के वाइब्रेशन्स फैलते है जो फैलेंगे वोह सभी नेगेटिविटी को समस्यायों को माया को स्वतः ही नष्ट करेंगे।

तो रोज इस तरह सभी कर्मयोग का बहोत अच्छा अभ्यास करेंगे। बाबा फरिश्ता बने शरीर छोड़ने के बाद नहीं शरीर में रहते हुए जिन्होंने उस समय बाबा को देखा यह बात ६८ के आखरी मास कि है आखरी मास कि बाबा सवेरे योग कराया करते थे खुद बहार आकर खड़े होकर सभी को दृस्टि देते थे और तब हम सुनते थे कि बहुतो ने बाबा को देखा कि बाबा दृस्टि से ऊपर है बाबा का शरीर जैसे बिलकुल हल्का रुई जैसा लाइट का बना हुआ है बहुतो ने आँखों से देखा था। तो **ऐसा नही कि हम केवल शरीर छोड़ कर कर्मातीत या फरिश्ता बनते है हम इस धरा पर रेहकर जब संसार के आकर्षणों से ऊपर उठ जाते है, जब हम योगयुक्त हो जाते है, जब संसार कि सभी इच्छाओं और तृष्णाओं से हम ऊपर चले जाते है, वोह हमारी फरिश्ता स्वरुप स्थिति है।** धरती से ऊपर हो गए हम इसके लिए भी हमें बहोत अच्छी साधनाएं करनी है।

में एक बात पर सोचा करता हूँ जब भाई बहने भी इस बात का उतर देते है कि **फरिश्ता अर्थात जिसका कोई किसी से रिश्ता नहीं।** और यह बात जब हम सुनते है तो सब को लगता है कि यह काम अपने बस का नहीं थिक है या नहीं किसी से रिश्ता नहीं यहाँ तो हज़ारो से रिश्ते बने हुए है संसार में। केवल एक से रिश्ता बाकि कोई से रिश्ता नहीं तो सब यह संकल्प ही छोड़ देते है कि अपने बस का फरिश्ता बनना नहीं छोडो इस झंझट को यह टेंसन भी क्यूँ ले कि फरिश्ता बनना है। लेकिन इसको बहोत सहज भाव से देखना है सब से पहली चीज अपने मन के बोज बाबा को देकर

अपने मन के बोज ज्ञान बल से हलके करके हमें यह संसार में हलके होकर रहना है। इस संसार में कुछ लोग तो ऐसे रहते है एक हंसी कि बात सुना देता हूँ संसार में बहोत सारे लोग ऐसे रहते है भाई लोग ऐसे रहते है जैसे सारे संसार को चलाने का बोज उनके ही ऊपर हो। जो सारे संसार को चलाने वाला है वोह परम आनंद में स्थित ऊपर और जिनको अपने को भी चलाना नहीं आता वोह बोज लिए घूम रहे है सोचने कि बात है। हम ज्ञान का प्रयोग करें ज्ञान का बल चाहिए इसमें, आत्म विश्वास चाहिए बहोत ज्यादा, अपनी शक्तियों में विश्वास चाहिए जिससे हम हलके रेह सके केवल बोज बाबा को देकर ही हलके नहीं रहा जाता प्रैक्टिकल येही है क्यूंकि बोज देते है फिर वापिस आजाते है। बोज देना समर्पित भाव रखना यह तो बहोत सूक्ष्म बात है यह वहीँ कर सकते है जिन्होंने में और मेरेपन कि जड़ो को काँटा हो यह जड़े बहोत गहरी उतर चुकी है इन जड़ो को पहचानना भी बहोत कठिन हो चूका है में और मेरा। जब तक इन जड़ो को पहचान कर हम समाप्त नहीं करते समर्पित भाव नहीं आता हम बोज देकर हलके नहीं हो पाते। सभी यह कहते है बोज तो दिए लेकिन कुछ हुआ तो नहीं बाबा ने तो केह दिया है में तो आया ही हूँ तुम्हारे बोज लेने फिर देने में कठनाई क्या है? इस सीजन कि पहली मुरली थी लेकिन देने के लिए में और मेरेपन से मुक्त होने का लम्बे काल का अभ्यास होगा और मेरा बाबा है बाबा से बहोत ज्यादा अपनापन हो गया हो, अब वोह हमारे लिए भगवान् नहीं रहा हमारा हो गया है। यह हमारापन अपनापन बिलकुल जिसपे प्यार समाया होता है अपनत्व समाया हो, अधिकार समाया हो ऐसी मनोस्थिति के बाद ही कोई अपने बोज बाबा को समर्पित कर सकते है। प्रैक्टिस करेंगे सभी।

तो हमें फरिश्ता बनाना है। पहले हमें ज्ञान बल से स्वयं को हल्का रखना सिख ना है यहाँ से हम शुरू करेंगे फिर योगबल से देखो बाबा ने जैसे किया योग कि सूक्ष्म थ्योरी इसकी सूक्ष्म गति जो आत्माएं जानती जा रही है वोह इन बातों को अनुभव करती है। अभी दो तिन दिन पहले ही मुरली **में आया में जब से आया तुम्हे योग सीखना प्रारम्भ किया और जब योग सिखाकर पूरा कर दूंगा तब में वापिस लौट जाऊँगा।** इतना गहन है यह राजयोग अभी हम सिख रहे है हम यह नहीं केह सकते हमने परफेक्टली सिख लिया है। **जिस दिन हम सम्पूर्ण रूप से सिख जायेंगे वही हमारी सम्पूर्णता भी होगी।** देखिये बाबा को भी तो स्थूल शरीर था शिवबाबा से शक्तियों कि पवित्रता कि किरणे लेते लेते बाबा को शरीर जो स्थूल तत्वो का बना हुआ है वोह अपने तत्वो के स्थूलता को छोड़कर लाइट हो गया था। योग में इतनी शक्ति है योग के वाइब्रेशन्स इस संसार में सब से अधिक शक्तिशाली है जो तत्वो कि स्थूलता को भी सूक्ष्मता में बदलने वाले है समजने कि कोशिश करेंगे इस बात को। ब्रह्माबाबा शिवबाबा से इतने अधिक एनर्जी ली कि उसकी तत्वो के बने हुए इस शरीर के स्थूल तत्व सूक्ष्म स्वरुप लेते गए। आप सब जानते है एक छोटी सी बात पर जो पढ़े लिखे है वोह केवल विचार करेंगे बरफ को पानी में बदल दिया जाता है गर्मी देकर पानी को बाफ में फिरसे बाफ पानी में और पानी को बरफ में। मेटर को एनर्जी में बदला जा सकता है बर्फ मेटर था उसको बाफ एनर्जी में बदल दिया जाये इसी तरह एनर्जी को भी मेटर में बदला जा सकता है विज्ञान अभी तक यहाँ पहोचा नहीं है योग कि शक्ति स्थूलता को सूक्ष्म में और सूक्ष्मता को पुनः स्थूल में बदलने में सक्षम है।

यह बहोत सूक्ष्म गति है इसको समज ने के लिए भी हमें लम्बे काल के योग अभ्यास कि आवश्यकता है तो हम बाबा से पवित्रता और शक्तियों कि किरणे लेते हुए अपने शरीर को स्थूलता को मन और शरीर के अंग अंग में फैले हुए विकारो को विकार केवल आत्मा में ही नहीं है कर्मेन्द्रियों में भी विकार समाएं हुए होते है । अंग अंग को हमें शीतल करना है, अंग अंग विकारो कि गर्मी से तप रहे है यह बाबा के महावाक्य है। हम शिवबाबा से पवित्रता कि किरणे लेकर अंग अंग को शीतल करेंगे तो धीरे धीरे जो आज के सन्देश में थी बहोत अच्छी कि कुछ बच्चे कर्मेन्द्रिय जित और प्रकृति जित बनते जा रहे है और जल्दी ही वोह प्रतक्ष्य हो जायेंगे और उन्हें देख कर सब जल्दी ही तेज पुरुषार्थ करेंगे यह भविष्य का एक सुंदर सा नक्शा आज खिंच दिया बाबा ने।

कल हम सभी के बिच में कौन आ रहा है? जिससे मिलने के लिए हम युगो से लालायित थे और कल में आप सभी को कहूंगा जो में सोचा करता था जब शुरू से मेने अव्यक्त बाबा को देखा पहले दिन से ही कि हम **बाबा को इतना देखलें जी भर के देखलें कि हमारी जन्म जन्म कि प्यास बुझ जाए।** देखना चाहते थे ना हम उसको? हमें यह भी बता दिया गया था कि वोह आँखों से नहीं देखा जा सकता लेकिन अब तो हम आँखों से ही देखते है ना उसको? हमारे दो नैनो के साथ हमारा तीसरा दिव्य नेत्र भी मिल जाता है और हम उसको जी भरके देख सकते है। कल सभी उसको जी भरके देखेंगे, थिक है?

में आपको एक अभ्यास बता देता हूँ एक दो अभ्यास बता देता हूँ अब से ही आप करेंगे और कल के दिन को जीवन कि यादगार। सभी करेंगे अभ्यास? एक तो कल मौन रखना है कई बार आज आपको बता दिया गया है मौन रखना वैसे सहज नहीं होता जिनको बोलने कि आदत है वोह मौन रखना कठिन हो जाता है इसलिए खाना खा लेते है तो बोलने लगते है इसलिए दोपहर तक तो मौन चलता है दोपहर के बाद खतम हो जाता है। कइयों का सवेरे सवेरे चलता है नाश्ते से पेट भरा बोलना शुरू करदिया क्यूंकि बोलने कि ताकत आजाती है ना खाने से इसलिए लोग व्रत रखते थे और मौन रखते थे ताकि ताकत ही नहीं रहे कि ज्यादा बोला जाए। तो कल हम भी चाहेंगे और आप भी येही चाहे कि शांतिवन को एक बार कम से कम शांतिधाम बना दिया जाए बोलो कौन साथ देंगे इसमें? बहोत अच्छा क्यूंकि शांतिधाम में रहने वाला शांतिधाम में ही आजाये तो उसे भी लगे कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है अपने ही घर में हूँ। एक बहोत अच्छा अभ्यास अभी एक विज़न बनालें आप कि अकेला में हूँ केवल और सामने चमकती हुयी दिव्य ज्योति इसी स्टेज पर यहीं मेरे पीछे आके बैठेंगे बाबा देखने लगो कमरे मे ही येही देखना केवल में और सामने चमकती हुयी परमज्योति, दिव्य ज्योति, महाज्योति। अभ्यास करके देखेंगे सभी बहोत बहोत क्यूंकि **योगी तो वही बन सकते है जो संगठन में रहते भी, परिवारों में रहते भी अकेले होजाये।** कम से कम कुछ समय के लिए तो अकेले ही हो जाए पसंद है यह अभ्यास? केवल में और बस महाज्योति ही दिखाई दे रही है बहोत प्रैक्टिस करेंगे कल।

जब आप सवेरे आँख खोलें तो यह जो बाबा के आने का दिन होता है क्यूंकि हम सब उसका आहवाहन करते है तो हमारा आह्वाहन हमारे दिल कि आवाज़, हमारा प्यार भरा निमंत्रण उसके पास पहोंचता रहता है और उधर से रेटर्न होता रहता है। तो सवेरे से ही बाबा बहोत बहोत प्यार भरी दृस्टि हम सब पर डालते है जैसे ही आप कल आँख खोलें आप ऊपर कि और देखना ज्ञान सूर्य अपनी किरणे डाल रहा है बहोत रस लेंगे इसका सवेरे से ही क्यूंकि सत्य को हमें पहचान लेना है। एक साथ कई लाख बाबा के बच्चे कल आँख खोलते ही बाबा कि और देखेंगे कि आज बाबा आने वाला है। आप भी जब बहार होते है अपने अपने घर में तो बाबा का दिन आते ही सब के मन में दूसरा स्वरुप हो जाता है आकर्षण हो जाता है बाबा आरहा है और जब परमसत्ता इस धरती पर उतरती है तो उसके वाइब्रेशन्स सारे संसार में फ़ैल जाते है। यह भी सभी को ख्याल रहे है वोह बैठते है यहाँ आकर लेकिन उसकी किरणे सारे संसार में फैलने लगती है उस समय जो इस तरह का एकाग्र करते है वोह चाहे जहाँ भी बैठे हो संसार में उनको उसकी उपस्थिति का आभास होने लगता है।

तो कल सवेरे से ही ज्ञान सूर्य हम पर किरणे डालेंगे हमारे प्यार का रेस्पोंड देंगे सवेरे से ही सभी इस अनुभूति में स्थिर हो जायेंगे आख खुलते ही यहाँ आकर नहीं जैसे ही आँख खुलें तब से ही ज्ञान सूर्य अपनी किरणे डाल रहा है। प्यार भरी रूह रिहान करेंगे अपने प्यार और अधिकार कि रस्सी में

बाबा को बांध कर निचे उतरेंगे कल हर एक अपना प्यार अर्पित करें बाबा को । सवेरे से ही जन्म जन्म भक्ति में हम सब ने जितना प्यार किया है उस प्यार के सागर को कल सवेरे उस सम्पूर्ण प्यार को इकट्ठा कर लें और अर्पित करें वोह प्यार बाबा पर अर्पित कर ने अर्थ है प्यार से उससे बातें करें । शुरू करें इस तरह है प्राणेश्वर हम तुम्हे जन्म जन्म कितना याद करते आये तुम हमारी आवाज सुनकर हमारी भक्ति का फल देने के लिए हमारे समुख आगये अब फिर से अपना धाम छोड़ कर निचे आजाओ । प्यार देंगे प्यार अर्पित करेंगे इस तरह बाबा को एक प्रक्टिस उसके बाद शुरू करेंगे और जिसको चालू रखेंगे बाबा के आने तक यह बहोत सुंदर योग हो जाएगा । संकल्प करेंगे में इस सृस्टि पर सब से अधिक भाग्यवान हूँ क्यूंकि आज स्वयं भगवान् मुझसे मिल ने आरहे है इस संकल्प के बाद अभी करेंगे सब ऊपर को देखो परमधाम में महाज्योति सर्व शक्तिवान अपना धाम छोड़ कर निचे आरहे है । अपनी तेजस्वी किरणे चारो और बिखेरते हुए निचे उतर रहे है और निचे और आ जाते है मेरे सर के ऊपर छत्र बन गए इस छत्र के निचे कुछ देर तक बैठ जायेंगे यह अभ्यास बार बार करते रहे कल सवेरे से ही योग बहोत पावरफुल हो जाएगा । बाबा ऊपर से चलते है निचे आते है मेरे सर के ऊपर छत्र बन जाते है कुछ देर छत्र रहते है फिर ऊपर जाते है फिर ज्ञान सूर्य निचे आते है मेरे आँखों के सम्मुख बिलकुल यहाँ देखेंगे बाबा को और उसकी किरणे पड़ रही है चेहरे पर आत्मा में भी समां रही है, सम्पूर्ण चेहरे पर पड़ रही है ।

संकल्प करेंगे में इस संसार में सब से अधिक भाग्यवान हूँ क्यूंकि आज स्वयं भगवान् मुझसे मिलने आ रहे है फिर देखेंगे वोह आ रहे है तो सवेरे से ही परमातम मिलन प्रारम्भ हो जाएगा । इस तरह जितनी बार आप यह दोनों अभ्यास करेंगे में अकेली सामने शिवबाबा और बाबा आ रहे है उतना सारा दिन चित शांत रहेगा सभी को कल के दिन विशेस ध्यान देना है क्यूंकि यह दिन बार बार नहीं आते । पुण्य आत्माओ को सर्व श्रेस्ठ भाग्यवान आत्माओ को यह दिन मिलता है इस दिन का पूरा फायदा उठाना है । बातें तो बाद में हो जायेगी बहोत रोज बातें करने का मौका मिलता है कल हम अपने से बातें करते रहेंगे और पहले से ही कौन संकल्प चुन कर रखेंगे कि आज बाबा आयेंगे तो हम यह चीज बाबा को दान करेंगे, अर्पित करेंगे कोई अपनी बुराई बाबा को और बाबा के पास से उसके रेटर्न में उससे वरदान ले लेंगे । तो हम सभी सच्ची लगन के साथ कल के दिन को ऐसा दिन बनाएंगे जो यह चारो युगो में अमरे अंतर मन में छपता रहे और जब भक्ति काल आये तो हम पुनः सूक्ष्म रूप से इस आनंद के समय में व्यतीत किया करें ।

-: ओम शांति :-

-: चुने हुए महावाक्य :-

- ✓ **निस्काम भाव से परमातम स्वरुप होकर स्थिर होकर करना यह कर्मयोग है।**
- ✓ **हमारे अपने ही संकल्प हमारे जीवन का निर्माण करते है।**
- ✓ **हम सोचे क्या फरिश्ता बनने के लिए हमारे पास कोई प्लान है या केवल हम कहते है हमें फरिश्ता बनना है? सभी अपने पर दृस्टि डालें हम कहते है हमें कर्मातीत होना है क्या सचमुच हम चाहते है कर्मातीत होना?**
- ✓ **ब्रह्मा बाबा पहले नंबर कि आत्मा को कर्मातीत होने में ३३ साल तपस्या करनी पड़ी तो हमें क्या करना चाहिए?**
- ✓ **बिना कर्मयोगी बने कोई भी कर्मातीत नहीं हो सकता और बिना कर्मेन्द्रिय जित बने कोई कर्मयोगी नहीं बन सकता ।**
- ✓ **योगी वोह, बुद्धिमान वोह जो अपनेको कर्म कि फिलिंग से ऊपर उठाले ।**
- ✓ **बुद्धिमान वोह जो अपने चित को शांत रखना सिखले । बुद्धिमान वोह है जो अपनी बुद्धि को परमातम स्वरुप पर स्थिर कर दें ।**
- ✓ **परात्मा में है परम बल यदि तुम उसकी याद में रेहकर कर्म करो तो तुम्हारे हर कर्म में परमबल भी साथ रहेगा और इससे हमारी कार्य शक्ति बढ़ जायेगी हम कम समय में ज्यादा काम कर पाएंगे ।**
- ✓ **स्वमान से बहोत फायदा होगा बाहरी वातावरण और व्यक्तियों का प्रभाव हम पर नहीं पड़ेगा, हमारा प्रभाव उन पर जाएगा।**
- ✓ **जो बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके पास आ नहीं सकते।**
- ✓ **जब से तुमने यह अलोकिक जन्म दिन कि गिफ्ट दी है तुम्हे सर्व शक्तियों कि जो शक्तियां मेरे पास है वोह सब तुम्हे दे दी है।**
- ✓ **ऐसा नही कि हम केवल शरीर छोड़ कर कर्मातीत या फरिश्ता बनते है हम इस धरा पर रेहकर जब संसार के आकर्षणों से ऊपर उठ जाते है, जब हम योगयुक्त हो जाते है, जब संसार कि सभी इच्छाओं और तृष्णाओं से हम ऊपर चले जाते है, वोह हमारी फरिश्ता स्वरुप स्थिति है।**
- ✓ **फरिश्ता अर्थात जिसका कोई किसी से रिश्ता नहीं।**
- ✓ **में आया में जब से आया तुम्हे योग सीखना प्रारम्भ किया और जब योग सिखाकर पूरा कर दूंगा तब में वापिस लौट जाऊँगा।**
- ✓ **जिस दिन हम सम्पूर्ण रूप से सिख जायेंगे वही हमारी सम्पूर्णता भी होगी।**
- ✓ **बाबा को इतना देखलें जी भर के देखलें कि हमारी जन्म जन्म कि प्यास बुझ जाए।**
- ✓ **योगी तो वही बन सकते है जो संगठन में रहते भी, परिवारों में रहते भी अकेले होजाये ।**